बुद्धवर्ष २५४४, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, ११ दिसंबर, २००० वर्ष ३० अंक ६

धम्मवाणी

चरथ, भिक्खवे, चारिकं बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं।

–भिक्षुओ! बहुत जनों के हित के लिए, बहुत जनों के सुख के लिए लोक पर दया करने के लिए, देवताओं और मनुष्यों के प्रयोजन के लिए, हित के लिए, सुख के लिए विचरण करो।

महावग्ग (विनयपिटक) ३२

पूज्य गुरुदेव की महत्त्वपूर्ण और प्रेरणास्पद धर्म-यात्राएं

इंगलैंड व अमेरिका

बहुत वर्षों के अन्तराल पर पू० गोयन्काजी ने अगस्त तथा सितम्बर २००० में इंगलैंड और अमेरिका की यात्रा की। स्वभावतः साधकों में उनकी यात्रा को लेकर बड़ा उत्साह था। गुरुदेव ने यह यात्रा करने का इसलिए निश्चय किया कि उन्हें संयुक्त राष्ट्र में होने वाले सहस्राब्दि विश्व शांति सम्मेलन में भाग लेना था तथा इंगलैंड और अमेरिका में धर्मप्रचारार्थ विपश्यना केन्द्रों तथा बड़े शहरों की यात्रा करनी थी। गुरुदेव की उम्र तथा उनके स्वास्थ्य के ख्याल से यह यात्रा कठिन थी। लेकिन विपश्यना के व्यापक प्रसार में वे कुछ भी कोर कसर बाकी नहीं रखना चाहते थे। इस ऐतिहासिक धर्म-यात्रा में वे यूरोप, अमेरिका और कनाडा के साधकों तथा धम्मसेवकों से, उनकी कठिनाइयों को समझने, उनको मार्गदर्शन देने तथा धर्म-पथ पर चलने हेतु प्रेरित करने के लिए मिले। गुरुदेव अस्सी के दशक में इन देशों में लगभग प्रतिवर्ष जाते थे। उनके प्रयत्नों से ही इन क्षेत्रों में विपश्यना का खूब प्रचार-प्रसार हुआ। नब्बे के दशक में बढ़ती हुई कठिनाइयों के कारण वे इन देशों की यात्रा नहीं कर सके क्योंकि एक तो उनकी उम्र अधिक हो गयी थी और दूसरे दक्षिण व दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में उनकी बहुत मांग थी। जब उन्होंने स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं तथा लम्बी यात्रा में होने वाली कठिनाईयों का ख्याल न कर यह यात्रा करने का मन बनाया तो पश्चिमी देशों के साधकों में खुशी की लहर दौड़ गयी। उनके आगमन का पूरा-पूरा लाभ उठाने तथा उनके समय का पूरा सदुपयोग करने के लिए उन्होंने जी तोड़ मेहनत की।

पहले वे ११ अगस्त को इंगलैंड गये। हवाई अड्डे से सीधे वे हीयरफोर्ड के विपश्यना केन्द्र 'धम्मदीप' गये। सैकड़ों साधक वहां उनसे मिलने तथा उनके साथ विपश्यना कर पाने के लिये एकत्र थे। १२ अगस्त को एक दिन का शिविर एक शामियाने में हुआ जहां पूरे यूरोप से लगभग ५०० साधकों ने भाग लिया। पू० गुरुदेव ने उन साधकों को आनापान और विपश्यना दी। उनमें से बहुत साधक पहली बार ही उनके साथ विपश्यना साधना कर रहे थे। यूरोप के अनेक देशों से आये बहुत से न्यासों के सदस्यों, धम्मसेवकों तथा आचार्यों से भेंट की, उनका प्रतिवेदन सुना और अपने क्षेत्र में विपश्यना कार्यक्रम का कैसे विकास किया जाय, इसके संबंध में मार्ग निर्देशन दिया। बी.बी.सी. वर्ल्ड सर्विस रेडियो तथा एक जर्मन साप्ताहिक ने धम्मदीप में उनका साक्षात्कार लिया।

रविवार १३ अगस्त को 'धम्मदीप' पर पू० गुरुदेव ने भिक्षुसंघ को दान दिया जिसमें भाग लेने के लिए सुदूरवर्ती क्षेत्रों से अनेक भिक्षु पधारे तो पुण्यार्जन हेतु बर्मी मूल के अनेक गण्यमान्य नागरिक भी आये। यह ऐसा अवसर था जिसमें साधकों ने उस संघ के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की, जिसके विपश्यी भिक्षुओं ने विपश्यना विद्या को सहस्राब्दियों तक अक्षुण्ण रखा। पू० गुरुजी को विपश्यना विद्या के प्रचार के प्रयासों के प्रारंभ से ही सहायता करने वाले बर्मी भिक्षु डॉ. रेवतधम्म तथा अन्य भिक्षुओं ने इस अवसर पर आशीर्वचन कहे। महाथेर ने गुरुदेव की इस बात के लिए प्रशंसा की कि वे धर्म को ऐसे ही सिखाते हैं जैसे कि भगवान बुद्ध सिखाते थे और त्रिरत्नों को संसार भर में बहुत लोगों में फैलाया है।

१३ की शाम को पू० गुरुदेव लंदन पहुँचे। पहुँचते ही उनका व्यस्त कार्यक्रम प्रारंभ हो गया। टाईम्स तथा एशियन ऐज के पत्रकारों ने उनका साक्षात्कार लिया। 'बी.बी.सी. वर्ल्ड सर्विस' ने भी उनका संक्षिप्त साक्षात्कार लिया। १४ और १५ अगस्त को उन्होंने दो सार्वजनिक प्रवचन दिये। विषय था "विपश्यना ध्यान और इक्कीसवीं शताब्दी में उसकी प्रासंगिकता।" पहला सार्वजनिक प्रवचन 'कडवा पाटिदार केन्द्र' हैरो, मिडिलसेक्स में था। लगभग ९०० लोगों ने इस धम्मप्रवचन को बड़े ध्यान से सुना। 'जी-टीवी' ने इसका प्रसारण भी किया। प्रवचन के बाद 'प्रेस से मिलिये' कार्यक्रम हुआ। दूसरा सार्वजनिक प्रवचन फ्रेंड्स हाउस, यूस्टन रोड लंदन में हुआ। इसमें भी लगभग ९०० लोगों ने भाग लिया। इनमें कई भिक्षु, कई प्रसिद्ध नागरिक और इंगलैंड में म्यंमा के राजदूत भी थे। इसके बाद व्यक्तिगत साक्षात्कार हुआ। समाचार माध्यमों ने इनका पूरा विवरण दिया।

पू० गुरुदेव बुधवार १६ अगस्त को लंदन से अमेरिका के लिए रवाना हुए। सर्वप्रथम वे डल्लास, टेक्सास के विपश्यना केन्द्र 'धम्मसिरि' गये। १७ अगस्त को दस-दिवसीय साधकों के साथ उन्होंने ध्यान किया, तत्पश्चात धम्मसेवकों तथा आचार्यों से मिले। यहीं पर 'डल्लास मॉरनिंग न्यूज' के संवाददाता द्वारा उनका साक्षात्कार लिया गया। सायंकाल 'गारलैंड सेंटर फार परफोरमिंग आर्टस' के हॉल में सार्वजनिक प्रवचन दिया। प्रवचन पश्चात उन्होंने बहुत से साधकों से भेंट की जो कि ह्यूस्टन

तथा ओक्लाहोमा आदि शहरों से आये थे।

शुक्रवार १८ अगस्त को वे शिकागो गये और उसी दिन उन्होंने वहां की यूनिटी हॉल में एक सार्वजनिक प्रवचन दिया। विषय था "धर्मनिरपेक्ष समाज में विपश्यना ध्यान –एक व्यावहारिक आध्यात्मिकता।" प्रवचन के बाद उन्होंने उस क्षेत्र के बहुत से विपश्यी साधकों से मुलाकात की तथा लुसिया मेजर से भी मिले, जो एक गंभीर साधिका है और मुख्य जेल पदाधिकारी है और 'नार्थ रिहैबिलिटेशन फेसिलीटी' सीयेटल में विपश्यना शिविर लगवाने में इसकी अहम् भूमिका थी।

शिकागो से वे शनिवार १९ अगस्त को कैलिफोर्निया विपश्यना केन्द्र 'धम्म महावन' गये। रविवार २० अगस्त को वे वहां सैकड़ों साधकों धम्म-सेवकों तथा सहायक आचार्यों से रात के ग्यारह बजे तक मिलते रहे। सोमवार २१ अगस्त को कैलिफोर्निया विपश्यना केन्द्र पर होने वाले एक दिवसीय शिविर में उन्होंने आनापान और विपश्यना दी जिसमें तीन सौ से अधिक साधकों ने भाग लिया। उसी शाम वे उसके निकटस्थ शहर फ्रेस्नो गये, जहां उन्होंने विपश्यना पर एक सार्वजनिक प्रवचन दिया। प्रवचन के बाद उन्होंने लॉसएंजीलस की यात्रा की और अपने अविरल कार्यक्रम को जारी रखा।

२२ अगस्त की सुबह लासएंजिलस के लोकप्रिय रेडियो प्रोग्राम संचालक माईकेल जैक्सन ने उनका साक्षात्कार लिया और सायं यहां के 'विलशियर ईबेल थियेटर' में उनका सार्वजनिक प्रवचन हुआ। जैसा कि उनके प्रवचनों में अक्सर होता है, इस प्रवचन में भी भिन्न-भिन्न धार्मिक संप्रदायों के, भिन्न-भिन्न वर्गों के, भिन्न-भिन्न मानव जातियों के तथा विभिन्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले लोगों ने भाग लिया।

बुधवार २३ अगस्त को पू. गोयन्काजी ने सान फ्रांसिस्को की यात्रा की, जहां पहुँचते ही उन्हें प्रतिष्ठित 'कॉमनवेल्थ क्लब रेडियो प्रोग्राम' में बोलना था। जब तक वे शहर में रहे, उनसे मिलने के लिए साधकों का तांता लगा रहा। शाम को 'शंभाला सन' के लिये उनका साक्षात्कार लिया गया। दूसरे दिन २४ अगस्त को 'के.पी.एफ.ए'. रेडियो प्रोग्राम (आकाशवाणी) द्वारा उनका साक्षात्कार लिया गया तो तीसरे पहर 'इण्डिया वेस्ट' मैगजीन के लिए भी साक्षात्कार हुआ। उसी शाम 'स्कॉटिश राईट सेन्टर' ओकलैंड में एक सार्वजनिक प्रवचन दिया।

शुक्रवार २५ अगस्त को उन्होंने सान फ्रांसिस्को की सिलिकोन वैली की यात्रा की जहां उन्हें सिलिकोन वैली के चुने हुए उद्यमियों को संबोधित करना था। सिलिकोन वैली के सफल भारतीयों के इस छोटे समूह को संबोधित करते हुए पू. गुरुजी ने विपश्यना के बारे में बताया कि भारत की यह पुरातन धरोहर विश्व कल्याण के लिए वरदान स्वरूप है जिसे म्यंमा ने अपने शुद्ध रूप में जीवित रखा। यह आज उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अतीत काल में थी। इसके अभ्यास के लिये धर्मान्तरण की कत्तई आवश्यकता नहीं है। तीसरे पहर 'इन्क्वायरिंग माइंड' मैगजीन ने भी इनका साक्षात्कार लिया।

उसी दिन शाम को उन्होंने 'पालो आल्टो' के लिफोर्निया के स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के कैम्पस में 'स्टेनफोर्ड मेमोरियल आडिटोरियम' में सार्वजनिक प्रवचन दिया जहां लगभग नौ सौ लोग थे। प्रवचन तथा प्रश्नोत्तर सत्र के बाद उन्होंने साधकों से एक-एक करतथा समूह में भेंट की। स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी, जिसने संसार को बहुत प्रसिद्ध वैज्ञानिक दिये और जहां बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक खोजें हुईं, उसमें बोलते समय उन्होंने कहा कि बुद्ध वैज्ञानिकों के भी वैज्ञानिक थे, सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक थे जिन्होंने नाम तथा रूप की सच्चाईयों के बारे में इस बात की खोज की कि इन दोनों के मिलने से क्या प्रतिक्रिया होती है! उन्होंने कहा कि बुद्ध ने किसी सम्प्रदाय की स्थापना नहीं की, बल्कि एक वैज्ञानिक की तरह आध्यात्मिक सच्चाई का पता लगाकर दुःख के मूल कारणों को बताया और साथ ही यह भी बताया कि उन कारणों को दूर करके कैसे सुख की प्राप्ति हो सकती है। असीम अनुकम्पा करके उन्होंने मानवता को विपश्यना की विधि सिखलाई और यह भी बताया कि विपश्यना विधि से अन्दर की सच्चाई का कैसे पता लगाया जा सकता है और कैसे अपने अंदर अक्षय सुख की प्राप्ति की जा सकती है।

कैलिफोर्निया में रहने के दौरान वे सियेटल, कोलोरेडो, मेण्डोसिनो, कनाडा तथा अन्य अनेक क्षेत्रों के न्यासी सदस्यों तथा सहायक आचार्यों से मिले।

शनिवार २६ अगस्त को गोयन्काजी ने न्यूयार्क की यात्रा की। रविवार को यात्रा की थकान के बावजूद वे मनहट्टन, (न्यूयार्क) में लगे एक एकदिवसीय शिविर में आनापान तथा विपश्यना देने गये जहां लगभग ४०० साधक एकत्र हुए थे। शिविर में आनापान देने के पहले उन्होंने साठ प्रवासी कंबोडिया निवासियों तथा फिलाडेल्फिया के कुछ साधकों से भेंट की और निकट भविष्य में उस क्षेत्र में विपश्यना केन्द्र बनाने की उनकी योजना के प्रति भी उन्हें उत्साहित किया। शाम को 'ट्राइसायकिल' मैगजीन के सम्पादक द्वारा उनका साक्षात्कार लिया गया।

संयुक्त राष्ट्र संघ के 'जनरल एसेम्बली हॉल' में "सहस्राब्दि विश्वशांति शिखर सम्मेलन" सोमवार २८ अगस्त को प्रारंभ हुआ। २९ अगस्त को संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव कोफीअन्नान ने संयुक्त राष्ट्र में धार्मिक तथा आध्यात्मिक नेताओं की ऐसी पहली सभा में उद्घाटन प्रवचन दिया। उसी दिन उन गिने-चुने आध्यात्मिक नेताओं में एक गोयन्काजी भी थे जिनको कोफीअन्नान से मिलने के लिए निमंत्रण मिला।

'कॉनफ्लिक्ट ट्रांसफोरमेशन' नामक सत्र में जहां धार्मिक समन्वय, सहिष्णुता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, आदि विषयों पर अधिक ध्यान दिया जा रहा था और जहां हजारों प्रतिनिधि तथा सैकड़ों प्रेक्षक थे, गुरुदेव ने उन्हें संबोधित किया। वहां उन्होंने उद्घोष किया कि बजाय इसके कि हम एक संप्रदाय से दूसरे संप्रदाय में अन्तरण की बात सोचें, अच्छा यह होगा कि हम लोग लोगों को दुःख से सुख की ओर, बंधन से मुक्ति की ओर तथा क्रूरता से करुणा की ओर ले चलें।

शिखर सम्मेलन का विषय विश्वशांति था, उसको ध्यान में रखकर गुरुदेव ने इस बात पर जोर डाला कि विश्व में शांति तब तक स्थापित नहीं हो सकती जब तक कि व्यक्तियों के भीतर शांति न हो। विश्व में तब तक शांति स्थापित नहीं हो सकती जब तक लोगों के दिलों में क्रोध है, घृणा है। मैत्री और करुणाभरे हृदय से ही विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। शिखर सम्मेलन का एक मुख्य पहलू संसार में लड़ाई-झगड़ा तथा तनातनी को कम करना है। इसके संबंध में गुरुदेव ने कहा –"जब तक अंदर में क्रोध और घृणा है तब तक वह चाहे ईसाई हो, हिन्दू या मुसलमान हो, दुःखी ही होता है। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने कहा –"जिसके शुद्ध हृदय में प्रेम और करुणा है वही अपने अन्दर (Kingdom of Heaven) स्वर्गीय सुख का अनुभव करसकता है। यह प्रकृति का नियम है और चाहे तो कोई यह कह ले कि यही ईश्वर का नियम है।

अपने प्रवचन का सार बताते हुए गुरुदेव ने सम्राट अशोक के शिलालेखों का एक उद्धरण पढ़ा जिसमें उसने कहा है, "केवल अपने धर्म का सम्मान और दूसरे धर्मों का असम्मान नहीं करना चाहिए बल्कि बहुत से कारणों से दूसरे के धर्मों का भी सम्मान होना चाहिए। ऐसा करके वह अपने धर्म की वृद्धि में तो सहायता करता ही है, साथ ही दूसरों के धर्मों की सेवा भी करता है। ऐसा न करे तो वह अपने धर्म की भी कब्र खोदता है और दूसरों के धर्मों को भी हानि पहुँचाता है। आपस में मिलकर रहना अच्छा है। दूसरों के धर्म का जो उपदेश है उसे सभी सुनें और सुनने के लिए इच्छुक भी हों"।

उसी दिन शाम को ग्रेटर न्यूयार्क के हार्वार्ड विजिनेस स्कूल क्लब को संबोधित किया और व्यक्तिगत अनुभूति के आधार पर उन्होंने यह बताया

कि विपश्यना कैसे व्यापारियों को व्यापार तथा व्यक्तिगत जीवन में सहायता करती है।

शिखर सम्मेलन कार्यक्रम के दौरान गोयन्काजी ने अनेक धार्मिक नेताओं से भेंट की। वाल्डोर्फ अस्टोरिया होटल में जब भारतीय प्रतिनिधियों का स्वागत समारोह हो रहा था तो वहां भी उन्होंने प्रवचन दिया और वहीं पर हिन्दू तथा बौद्ध नेताओं की अनौपचारिक सभा में भी बोले।

शुक्रवार १ सितम्बर को न्यूयार्क क्षेत्र के साधकों से मिलने फ्लशिंग, न्यूयार्क के 'धम्म हाउस' गये। प्रवासी चीनी साधकों के एक बड़े समूह को बहुत-सी समस्यायों पर गुरुजी का मार्ग-दर्शन पाने का सुअवसर मिला क्योंकि गोयन्काजी ने तीन घंटे से अधिक का समय उनके साथ बिताया। शनिवार २ सितम्बर को शेरेटन होटेल, फ्लशिंग, न्यूयार्क में उनके सार्वजनिक प्रवचन में हॉल खचाखच भरा था जिसमें बहुत से प्रवासी चीनी और भारतीयों के साथ-साथ कोकेशियन,अफ्रिकी और अमेरिकी लोग थे। न्यूयार्क में 'वॉयस आफ अमेरिका' और टी.वी. एशिया ने अपने हिन्दी कार्यक्रमों के लिये उनका साक्षात्कार लिया।

प्रवचन के बाद गुरुजी मैसाचुसेट्स के विपश्यना ध्यान केन्द्र 'धम्मधारा' गये। रविवार ३ तथा सोमवार ४ सितम्बर को उन्होंने बहुत से साधकों तथा 'धम्मधारा में विपश्यना ध्यान के आलोक में औषध, विज्ञान और आध्यात्मिकता', पर होने वाले सम्मेलन के प्रतिभागियों से भेंट की। 'बुद्ध की शिक्षा तथा इसकी असाम्प्रदायिक प्रकृति' नामक विषय के कई सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों पर हारवार्ड डिविनिटी स्कूल के विद्वानों की एक मंडली के साथ विचार-विमर्श किया। उन्होंने एक नामी स्थानीय कारागार के कर्मचारियों तथा कारागार अधिकारी, जिनके साथ विपश्यना के एक पुराने साधक 'संघीय न्यायाधीश' भी थे, से भी भेंट की और उन्हें अपने कारागार में विपश्यना शिविर प्रारंम्भ करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने 'विपश्यना : मन और शरीर का विज्ञान' नामक विषय पर प्रवचन भी दिया।

केन्द्र खचाखच भरा था। बहुत से साधक केन्द्र के बाहर रह रहे थे। वे बहुत दूर-दराज के क्षेत्रों से, यहां तक कि कनाडा से भी आये थे और उनका उद्देश्य था –गोयन्काजी से मिलना तथा उनका प्रवचन सुनना। मंगलवार ५ सितम्बर को उन्होंने नार्थएम्प्टन के 'स्मिथ कोलेज चेपेल' में एक सार्वजनिक प्रवचन दिया । यहां उन्होंने 'विपश्यना ध्यान' से होने वाले लाभों के बारे में बताया और यह भी बताया कि कैसे यह व्यावहारिक है, वैज्ञानिक है तथा तत्काल फल देने वाला है। उन्होंने यह भी बताया कि इसमें कट्टरपना बिल्कुल नहीं है और यह इसी जीवन में यहीं फल देने वाला है। पूर्व में दिये गये प्रवचनों की तरह ही उन्होंने इस प्रवचन में सभी लोगों का आह्वान किया और कहा – "सभी धर्मों में जो सर्व सम्मान्य गुण हैं तथा चित्त की विशुद्धि जो इनका आभ्यन्तरिक सार है, उन्हीं पर हमें ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। धर्म के इसी पहलू को हमें महत्त्व देना चाहिए और धर्मों के बाहरी छिलके जैसे –बहुत प्रकार के अनुष्ठान, कर्मकाण्ड, उत्सव और हठधर्मिता को लेकर जो लड़ाई-झगड़ा होता है उससे दूर रहना चाहिए।"

वृहस्पतिवार ६ सितम्बर की सुबह गुरुदेव ने विपश्यना ध्यान केन्द्र में एकत्र पुराने साधकों की एक विशाल सभा में बोलते हुए कहा –'आप सभी धर्म के प्रकाश स्तंभ हैं। आपका शांत व्यवहार और सुखी जीवन ही दूसरे लोगों को विपश्यना की ओर आकर्षित करेगा।" गुरुदेव से मिलकर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से आये साधकों ने प्रभूत प्रेरणा पायी। कनाडा से आये साधकों की एक बड़ी मंडली ने भी उनसे भेंट की। उन्होंने टोरोन्टो से आये साधकों को टोरोंटो के निकट एक नये विपश्यना केन्द्र के लिए जमीन खरीदने की अनुमति दी।

शाम में उन्होंने 'मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय आकाशवाणी' को एक घंटे तक साक्षात्कार दिया। उसके बाद दस दिवसीय साधकों को आनापान तथा विपश्यना दी। शुक्रवार ७ सितम्बर को गुरुजी ने वहां से न्यूयार्क सिटी के लिए प्रस्थान किया जहां वे 'ग्लोबल लीडर्स ऑफ टुमारो' की एक मंडली (जो वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम की शाखा है) और 'फारच्यून' मैगजीन के कुछ कर्मचारियों से भेंट की। इस अनौपचारिक भेंट में उन्होंने व्यापार तथा व्यापारिक नेतृत्व में आध्यात्मिकता के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे विपश्यना जो कि असाम्प्रदायिक है, व्यावहारिक है, शीघ्र फल देने वाली है, व्यापार की दुनिया में आध्यात्मिकता लाने के लिये एक औजार बन सकती है।

८ और ९ सितम्बर को संयुक्त राज्य अमेरिका में होने वाले विपश्यना कार्यक्रम के भिन्न - भिन्न पहलुओं पर विपश्यना के वरिष्ठ आचार्यों से विचार-विमर्श किया। इन दिनों वे साधकों तथा सहायक आचार्यों से भी मिलते रहे। संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा के विपश्यना कार्यक्रमों को एक नयी और ऐतिहासिक प्रेरणा देकर गुरुदेव ने संयुक्त राज्य अमेरिका से विदा ली।

दक्षिण भारत और महाराष्ट्र की धर्मयात्राएं

पूज्य गुरुदेव एवं माताजी ने दक्षिण भारत की यात्रा आंध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद से प्रारंभ की। हैदराबाद में १९७५ में म्यंमा के बाहर विश्व का पहला ऐतिहासिक विपश्यना केंद्र बना था। अतः स्थानीय साधकों और वहां की सरकार ने मिल कर इसकी रजत जयन्ती मनाने का आयोजन किया। इसके कुछ समय पूर्व ही स्विटजरलैंड के डाओस नगर में आयोजित "वर्ल्ड इकोनामिक फोरम" की मीटिंग में भाग लेते समय पूज्य गुरुदेव की भेंट आ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री चंद्रबाबू नायडू से हुई थी। उस समय उन्होंने धर्मचर्चा के दौरान पूज्य गुरुजी से बहुत आग्रह किया कि वे राज्य के अतिथि के रूप में हैदराबाद आने का कार्यक्रम बनाएं ताकि उनके प्रदेश के लोगों का मंगल सधे। उस समय तो कोई कार्यक्रम मतय नहीं हुआ परंतु भारत लौट कर श्री चंद्रबाबू नायडू ने 'विपश्यना अंतर्राष्ट्रीय साधना केंद्र' "धम्मखेत्त" जाकर वहां की गतिविधियों का बारीकी से निरीक्षण किया, वहां पर साधनारत अनेक साधकों से बातें की, उनके साथ दोपहर का भोजन भी किया तब विपश्यना के प्रति अति श्रद्धालु हो गए और पूज्य गुरुजी को हैदराबाद आने का दबाव देने लगे। उनका आमंत्रण स्वीकार करते हुए गुरुजी ने वहां जाने का कार्यक्रम बनाया।

इस प्रकार २० से २४ सितंबर तक पूज्य गुरुदेव के क्रमशः पांच प्रवचन निश्चित किये गये। इस अवसर पर हैदराबाद के कर्मठ कार्यकर्ताओंद्वारा बहुत श्रमपूर्वक तैयार की गयी अंग्रेजी, हिंदी और तेलुगू भाषा में "विपश्यना स्मारिका" का भी प्रकाशन और वितरण किया, ताकि विपश्यना संबंधी तथ्यों की जानकारी लोगों को लिखित रूप में प्राप्त हो सके। सभी प्रवचनों का 'क्लोज्ड सर्किट टीवी' प्रसारण हुआ और ऑडियो-विडियो की सब जगह रेकार्डिंग की गयी।

२० सितंबर को प्रातः "अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना साधना केंद्र" 'धम्मखेत्त' पर चल रहे शिविर में पूज्य गुरुजी ने विपश्यना दी और सायं हैदराबाद के 'ललितकला तोरणम्" अकादमी के खुले प्रांगण में बारिश आदि से सुरक्षित पंडाल बना कर विशाल मंच के साथ श्रोताओं को बैठने के लिए दरियों के ऊपर कुर्सियों तथा अन्य साजोसामान के साथ लगभग चार हजार लोगों के बैठने की समुचित सुविधा उपलब्ध करायी गयी, जहां बिजली, पंखे, पानी सहित पूर्ण सुरक्षा का समुचित प्रबंध था। पहले दिन का विषय था –"विपश्यना इन गवर्नेंस" यानी "शासनतंत्र में विपश्यना"। मुख्यमंत्री ने पूज्य गुरुजी का स्वागत किया और पूज्या माताजी सहित उन्हें प्रवचन-मंडप के मंच पर बिठा कर धर्म-प्रवचन के लिए निवेदन के पश्चात स्वयं पब्लिक के बीच में जाकर बैठ गये। पूरे घंटे भर पूज्य गुरुजी का प्रवचन सुना, आधे घंटे से अधिक समय तक प्रश्नोत्तर सुना और तत्पश्चात १५-२० मिनट तक अपनी टिप्पणियों के साथ इस बात की

घोषणा की कि उनके राज्य के जो अधिकारी शिविर में जाना चाहें, उन्हें सवैतनिक अवकाश मिलेगा। [G.O. Ms. Number 351, Gen. Admn. (AR&T.III) Deptt. Dt. 18-10-2000]

इसके तुरंत बाद उसी मंच पर प्रेस कांफरेंस का भी आयोजन था, जिसे संबोधित करते हुए पूज्य गुरुजी ने जोर दिया कि प्रचार माध्यमों को केवल चटकीली और भड़काऊ बातों को ही नहीं, बल्कि अच्छी और समाजोपयोगी बातों को भी प्रकाश में लाना चाहिए, जिससे कि देश के साथ-साथ व्यक्तिगत विकास को बल मिले। सभी समाचार पत्रों ने उनके प्रवचनों, मुख्यमंत्री के वक्तव्यों तथा पूज्य गुरुजी द्वारा पत्रकारों के सम्मुख रखे विचारों का खुल कर समर्थन किया और सुर्खियों में प्रकाशित भी किया।बाकी के चार प्रवचनों को भी पत्र-पत्रिकाओं में खूब स्थान मिला।

२१ सितंबर को 'ललितकलातोरणम्' के उसी पंडाल में "धम्म इन बिजनेस" "व्यवसाय में धर्म" विषय पर पूज्य गुरुजी का अंग्रेजी प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने समझाया कि व्यवसाय पूरे राष्ट्र की उन्नति के लिए होता है न कि केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए। पूरी तरह भरे पंडाल के सभी श्रोता और व्यवसायी आह्लादित हुए।

२२ को 'उस्मानिया विश्वविद्यालय' के प्रांगण में "धम्म इन एजूकेशन" "प्रशिक्षण में धर्म" विषय पर हुए प्रवचन में विश्वविद्यालय का लगभग १२०० सीट का हॉल पूरी तरह भर चुका था। अपेक्षा से अधिक संख्या में एकत्रहुए विद्यार्थियों को बैठने की जगह नहीं थी। बाहर 'क्लोज्ड सर्किट टीवी' के द्वारा पूज्य गुरुजी का प्रवचन सुनाई और दिखायी दे रहा था, जिसे देखने के लिए लगभल ४-५ सौ विद्यार्थियों का समूह बाहर खड़ा या बैठा तन्मयता से सुनता रहा।

२३ को पुनः 'ललितकलातोरणम्" में हिंदी प्रवचन रखा गया था। विषय था "वास्तविक धर्म क्या है?" इस दिन हॉल क्षमता से अधिक भरा हुआ था और मांग उठी कि अगला २४ सितंबर की शाम का प्रवचन भी हिंदी में ही हो। परंतु वह अंग्रेजी में "धम्म इन लाइफ "विषय पर पहले ही प्रचारित हो चुका था। अतः अचानक बदलने से उसे सुनने आने वालों को निराशा होती। फिर भी लोग बहुत बड़ी संख्या में आए और प्रवचन का लाभ उठाया।

२५ की प्रातः का कार्यक्रमविपश्यना केंद्र के साधकों को मैत्री आदि के लिए निर्धारित था, परंतु कार्यक्रम में अचानक परिवर्तन हुआ। पूज्य गुरुजी को श्रृंगेरी के शंकराचार्य से मिलने के लिए प्रातःकालीन हवाई जहाज से बैंगलोर के लिए रवाना होना पड़ा। वहां से सीधे श्रृंगेरी पहुँचे और दोनों धार्मिक नेताओं के बीच सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में जो बातचीत हुई, उससे देश की एकता और अखंडता बनाए रखने में बहुत बड़ा बल प्राप्त होगा। विगत अक्टूबर १९९९ में वाराणसी में कांची के शंकराचार्य से बातचीत के दौरान जिन मुद्दों पर सहमतिपूर्ण पत्रक प्रकाशितहुए थे, श्रृंगेरी के शंकराचार्य ने उसकी पुष्टि करते हुए उसे समाज में सौमनस्यता बनाए रखने के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण कदम बताया।

बैंगलोर में भी पूज्य गुरुजी के तीन प्रवचन हुए। पहला प्रवचन २६ सितंबर को हिंदी में एस.एस.एम.आर.वी. कालेज के ऑडिटोरियम, जे.पी. नगर में हुआ। विषय था –"विपश्यना : सुखमय जीवन जीने की कला"। स्थानीय लोगों की धारणा थी कि केवल दो-चार दिन पूर्व की सूचना के कारण अधिक से अधिक पांच-छह सौ लोग भले आयें, परंतु हुआ यह कि हॉल की पूरी क्षमता भर जाने के अतिरिक्त कुछ लोग खड़े नजर आए।

२७ का प्रवचन अंग्रेजी में उसी हॉल में "विपश्यना : शांति और सद्भावना" विषय पर था। इस समय हॉल तो भरा ही, लोगों को बाहर भी खड़ा होना पड़ा।

२८ का प्रवचन 'जे.एन. टाटा ऑडिटोरियम, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस' में रखा गया था। विषय था "आधुनिक जीवन में विपश्यना की उपयोगिता"। प्रवचन पश्चात सीधे हवाई अड्डे जाकर पूज्य गुरुजी को चेन्नई (मद्रास) पहुँचना था।

चेन्नई के नवनिर्मित विपश्यना केंद्र 'धम्मसेतु' पर रहते हुए पूज्य गुरुजी को प्रवचन-स्थल तक जाने-आने के लिए लगभग डेढ़-दो घंटे की यात्रा करनी पड़ती। परंतु केंद्र का वातावरण इतना शांत और प्रबल धर्मतरंगों से ओतप्रोत था कि वहां पहुँचते ही सारी थकान निकल जाती। केंद्र को सजाने-सँवारने और पूज्य गुरुजी की उपस्थिति में अंग्रेजी, हिंदी तथा तमिल भाषाओं में 'विपश्यना स्मारिका' प्रकाशित करने में श्री प्रकाश कुमार सरावगी तथा पूरे परिवार का अतुलनीय सहयोग था।

२९ को प्रातः केंद्र पर ही पुराने साधकों के साथ साधना और प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम था। सायं प्रवचन के लिए शहर के 'म्युजिक एकादमी' हॉल में जाना था। विषय था –"धम्म इन लाइफ "और लगभग १५०० की क्षमता वाला हॉल पूरी तरह भरा हुआ था। प्रवचन व प्रश्नोत्तर पश्चात वहीं पर प्रेस कान्फरेंस थी। सुबह के समाचार पत्रों में विपश्यना की विशद चर्चा थी।

३० सितंबर को प्रातः केंद्र पर ही ट्रस्टी और सहायक आचार्यों के साथ मीटिंग थी और सायं "डी.ए.वी. स्कूल" में "धम्म इन एजूकेशन" विषय पर प्रवचन हुआ। स्वामी दयानंद सरस्वती प्रायमरी स्कूल के बच्चों और शिक्षक-शिक्षिकाओं को देखते हुए पूज्य गुरुजी ने ४५ मिनट तक अंग्रेजी में और १५-२० मिनट तक हिंदी में प्रवचन देते हुए समझाया कि आज विद्यार्थी जीवन में विपश्यना का कितना महत्त्व है। विद्यार्थी और बच्चे ही देश की आधारशिला हैं। इनके अंदर बचपन से ही धर्म की पकड़ होनी नितांत आवश्यक है।

१ अक्टूबर को प्रातः समीप के अन्य नगरों व प्रदेशों के ट्रस्टी, स.आचार्य और साधकों ने धम्मसेतु पर पधार कर पूज्य गुरुजी का मार्गदर्शन प्राप्त किया। उसी शाम को पुनः म्युजिक अकादमी में हिंदी में प्रवचन था।

२ अक्टूबर को सायं अपोलो अस्पताल में डॉक्टर्स और नर्सेस के लिए प्रवचन रखा गया था। इसका लाभ अस्पताल के अतिरिक्त बाहर के लोगों ने भी लिया।

इसके बाद अगला पड़ाव था ३ अक्टूबर को नागपुर। धर्म की परीक्षा होनी थी। कठिनाइयों के दौर से गुजरते हुए जब पूज्य गुरुजी और माताजी नागपुर के विपश्यना केंद्र "धम्मनाग" पहुँचे तो रात बीत कर लगभग ४ बज चुके थे। अगले दिन से प्रवचनों का अनवरत प्रवाह था। प्रतिदिन दिन में दो या दो से अधिक कार्यक्रम निश्चित हो चुके थे। किसी को भी टालना असंभव-सा था। पूज्य गुरुजी का स्वास्थ्य बहुत अनुकूल नहीं था फिर भी धर्मबल से उन्होंने सभी कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण किये।

४ अक्टूबर को प्रातः ऐतिहासिक दीक्षाभूमि के चैत्यभूमि हॉल में पुराने साधकों की सामूहिक साधना में लगभग छह हजार साधकों को पूज्य गुरुजी ने विपश्यना और मंगल मैत्री दी। उसी शाम वहां के यूनिवर्सिटी ग्राउंड में सार्वजनिक प्रवचन हुआ। विषय था –"शुद्ध धर्म और संप्रदाय"। इसमें लगभग दस हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। इसी स्थान पर क्रमशःहुए तीन प्रवचनों में नित्यप्रति सुनने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती ही गयी। दस हजार की क्षमता वाले पंडाल के बाहर २-४ हजार लोग खड़े व बैठे दिखायी दिये। इतने अधिक प्रश्नोत्तर हुए कि घंटे भर का अतिरिक्त समय भी उन्हें पूरा नहीं कर सका।

५ अक्टूबर को 'धम्मनाग' पर साधकों को विपश्यना दी गयी, जिसमें भाग लेने के लिए लगभग एक हजार पुराने साधक विभिन्न वाहनों से केंद्र पर पहुँचे। बैठने के लिए कई तंबू लगाने के बावजूद लोग खुले में धूप अथवा छोटे-मोटे वृक्षों की ओट में बैठे विपश्यना लेते रहे। अंत में पूज्य गुरुजी की मंगल मैत्री लेकर दोपहर को ही अपने वाहनों से वापस लौटे।

यूनिवर्सिटी ग्राउंड में सायंकालीन सार्वजनिक प्रवचन का विषय था –"धर्म का सार"।

६ अक्टूबर को प्रातः वे सुगतनगर में पुराने साधकों के एक दिवसीय शिविर में मंगल मैत्री देने के लिए गये, जहां शिविर के साधकों की संख्या तो सीमित थी, परंतु दर्शनार्थी पुराने साधक हजारों की संख्या में बैठे दिखायी दिये। सब से आग्रह किया गया कि शांतिपूर्वक बैठे रहें। पूज्य गुरुजी सब को मंगल मैत्री देते हुए बाहर निकले और वहां से एक दूसरे "ड्रैगोन पैलेस" नामक स्थान पर विपश्यना कर रहे साधकों को भी मैत्री देने पधारे। वहां के भव्य बुद्ध मंदिर के परिसर में साधनारत साधकों को भी कुछ देर ध्यानभावना करवाकर मंगल मैत्री देते हुए विलंब से धम्मनाग पहुँचे। पुनः यूनिवर्सिटी ग्राउंड में सायंकालीन प्रवचन में जाना था। आज का विषय था –"धर्म को जीवन में कैसे उतारें!"

७ अक्टूबर को बाबासाहब अंबेडकर की कर्मस्थली दीक्षाभूमि के विशाल प्रांगण में प्रातः १०-४५ बजे से प्रवचन था। लगभग २५ हजार लोगों की भीड़ को संबोधित करते हुए पूज्य गुरुजी ने उन्हें याद दिलाया कि बाबासाहब ने उस समय जो किया वह बहुत उत्तम था। अब यह आवश्यक है कि धर्म हमारे जीवन में उतरे। पंचशील का पालन होना चाहिए। इसके लिए आज के दिन संकल्प करें –कम से कम एक शील का पालन करने का व्रत लें कि **किसी प्रकार के नशे-पते का सेवन नहीं करेंगे**। इसके पालन में कठिनाई आए तो हमारे पास आएं, हम इससे निकलने के लिए विद्या सिखायेंगे। श्री रा. सु. गवई, श्रीमती सुलेखाताई कुंभारे सहित अनेक गण्यमान्य नेताओं ने हाथ उठाकर इस प्रतिज्ञा का पालन करने का व्रत लिया। उसी सायं 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के कुछ वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के लिए भी एक प्रवचन आयोजित था और उसके तुरंत बाद उनके प्रमुख श्री के .एस. सुदर्शन से भी धर्मचर्चा हुई।

८ अक्टूबर को प्रातः १०:३० से १२ बजे तक अंग्रेजी में प्रवचन रखा गया। विषय था –"हाऊ विपस्सना हेल्प्स इन स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड ब्रिंग्स पीस एंड हार्मनी इन लाइफ"। बुद्धिजीवी वर्ग के लिए रखा गया यह प्रवचन 'यूनिवर्सिटी ग्राउंड" के पंडाल में ही था, जो कि लगभग भरा हुआ था। उसी शाम पुराने साधकों की सामूहिक साधना हुई, जिसमें पूज्य गुरुजी ने विपश्यना दी और लगभग छह हजार साधकों को मंगल मैत्री से अभिषिक्त करके धम्मनाग वापस लौटे।

९ अक्टूबर को प्रातः नागपुर के केंद्रीय जेल में पहुँच कर वहां के साधकों को मंगल मैत्री दी तथा अन्य वंदियों के लिए सार्वजनिक प्रवचन भी। इस समय महाराष्ट्र के आई.जी. ने स्वयं उपस्थित होकर वंदियों को संबोधित किया और उनके लिए अनेक प्रकार की सुविधाओं का ऐलान भी। नागपुर की इस जेल में कई वि. शिविर लग चुके हैं। अतः जेल अधिकारियों ने इस परिसर में एक स्थाई विपश्यना केंद्र स्थापित करने की योजना बनायी है।

सायंकालीन विमान से गुरुदेव व माताजी मुंबई वापस पहुँचे तो तीन दिन बाद ही पुनः चार दिवसीय यात्रा पर पूना चले गये।

पूना शहर में बने नए विपश्यना केंद्र "धम्मपुण्ण" का एक प्रकार से उद्घाटन था। वहीं पर उनका निवास रखा गया और पुराने साधकों की चेतना को प्रबल करने के लिए प्रवचन हुआ। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक उत्साहवर्धक कार्यक्रम हुए। येरवडा जेल में उपमुख्यमंत्री श्री छगन भुजबल की उपस्थिति में साधकों व अन्य कैदियों को संबोधित करने के साथ ही जेलों तथा कैदियों में सुधार के लिए अनेक उपायों पर परिचर्चा हुई। सार्वजनिक प्रवचनों के अलावा उद्योगपतियों तथा वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों की विशेष गोष्ठी हुई जिसमें विपश्यना के होने वाले लाभों पर प्रकाश डाला गया और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए उपायों पर बल दिया गया।

इन सब से धर्मजागरण की उत्तमोत्तम प्रक्रिया का ही आभास होता है। इसके अभ्यास से अनेकों का मंगल हो! सब का हित-सुख सधे! सारे प्राणी सुखी हों!

आवश्यक सूचनाः –

किसी कारणवश अक्टूबर की पत्रिका प्रकाशित नहीं हो सकी थी, जिसका खेद है।

जी-टीवी पर पूज्य गुरुजी का चव्वालीस कड़ियों वाला प्रवचन

हर सोमवार प्रातः ७ से ७:३० बजे तक पूज्य गुरुजी का प्रवचन क्रमशः प्रसारित किया जाता है। पाठक अपने स्वजन-परिजनों सहित इसका लाभ उठा सकते हैं।

धर्म शिविर यात्रा – २००१

पिछले साल सयाजी ऊ बा खिन की जन्म शताब्दी पर आयोजित की गयी धर्म यात्रा के जबरदस्त प्रभाव के बाद विपश्यना विश्व विद्यापीठ इस साल बुद्ध के जीवनकाल के ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा का आयोजन कर रही है। गुरुजी और माताजी की प्रेरणादायक उपस्थिति ने म्यन्मार की सम्पूर्ण यात्रा को अविस्मरणीय बनाया था। पूज्य गुरुजी और माताजी ने इस यात्रा में भी शामिल होने की स्वीकृति दी है।

संपूर्ण यात्रा के दौरान जगह-जगह पर ध्यान के सत्र होंगे। तत्पश्चात गुरुजी के प्रवचन होंगे जिनमें इन जगहों की ऐतिहासिक प्रासंगिकता और बुद्ध के जीवनकाल में यहां घटी घटनाओं पर प्रकाश डाला जायेगा और इन स्थानों पर ध्यान करने का महत्व समझाया जायेगा। धर्म यात्रा में इस क्षेत्र में पड़नेवाले विपश्यना केंद्रों पर ध्यान के सत्र होंगे।

यात्रा का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है।

धर्म यात्रा १८ फरवरी २००१ को मुंबई या अहमदाबाद से शुरू होकर बनारस तक होगी और २ मार्च २००१ को समाप्त होगी। यात्रा में एक व्यक्ति का खर्च रू. १५०००/- होगा जिसमें भोजन, रहने की सुविधा (तंबू में) और रेल-भाड़ा शामिल है।

पंजीकरण (फर्स्ट-कम-फर्स्ट) बेसिस पर होगा। पंजीकरण के कन्फरमेशन के बाद रद्द या बदली सम्भव नहीं।

हवाई जहाज से सफर करने वाले धर्म भाई, बहनों को भारत से प्रस्थान करनेवाले हवाई अड्डे का नाम सूचित करना चाहिए। बेहतर यही होगा कि वे सारी बुकिंग (विमान की भी) धर्म यात्रा के आयोजकों के जरिए ही करायें क्योंकि देश में अनेक जगहों के सफर के लिए रेल की रिजरवेशन करनी होगी। विमान खर्च को (रू. १५०००/- यात्रा पाकेज खर्च) के साथ जोड़ना होगा।

सभी विदेशी पासपोर्ट धारकों के पास (भारतीय मल्टिपल विजिट विसा) और नेपाल विसा होना चाहिए ताकि वे नेपाल स्थित लुंबिनी में प्रवेश पा सकें। जिनके पास भारत के लिए मल्टिपल एन्ट्री विसा नही है, उनको लुंबिनी का दर्शन छोड़ना होगा।

इस यात्रा में हुई बचत को विपश्यना के प्रसार के लिए सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट को दान स्वरुप दिया जायेगा। भुगतान नकद या चेक ,बैंक ड्राफ्ट (सयाजी ऊ बा खिन ट्रस्ट, मुंबई के नाम) से करना होगा और मुम्बई में निम्न पते पर भेजना होगा।

श्री. श्याम गोयन्का
इन्डो-बर्मा ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन,
ग्रीन हाऊस, ग्रीन स्ट्रीट, २ रा तल्ला,
फोर्ट, मुंबई ४०० ००१
टेल: (९१)(२२) २६६४६९८, २६६४०३९;
फेक्स: (९१)(२२) २६६४६०७;
e-mail: ibtc@vsnl.com

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री कौशलेंद्र प्रताप सिंह, दिल्ली २. श्री रतिराम सूर्य, गाजियाबाद
३. श्रीमती जस मदान, फरीदाबाद ४. श्री रविकुमार रेड्डी, एलूरू
५. श्री अशोक रामराव बाभले, सूरत
6. Mr Karunaratne Wijeweera, Sri Lanka

बाल-शिविर शिक्षक

१. श्री रणजीत सिंह, होशियारपुर २. श्री प्रकाश खिराडे, औरंगाबाद
३. श्रीमती पन्ना अंगरीश, जालंधर
4. Mrs Chandra Ratnyake, Sri Lanka
5. Mrs Chintamanie Pilimatalauwe, Sri Lanka
6. Mr Charles Sugathadasa Amaratunga, Sri Lanka
7. Mr Lionel R. Pilimatalauwa, Sri Lanka

नूतन वर्षाभिनंदन

हर वर्ष की तरह अनेक साधकों की ओर से दीपावली एवं नव वर्ष के अभिनंदन-पत्र मिले हैं। एक-एक को नव वर्ष की मंगल कामना प्रेषित कर पाने का अवसर नहीं मिल पाया, इसलिए 'विपश्यना' पत्रिका के माध्यम से उन्हें तथा अन्य सभी साधक-साधिकाओं को मेरी असीम मंगल मैत्री पहुँचे! नव वर्ष सब के मानस में धर्म की नवज्योत प्रज्वलित करे! दिनोंदिन प्रज्ञा पुष्टतर होती जाय! धर्म धारण करने का मंगलकारी फल प्रभूत हो! प्रभावशाली हो! सब का मंगल हो!

मंगल मित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

दोहे धर्म के

शुद्ध धरम फिर जगत में, पूज्य प्रतिष्ठित होय।
जन-जन का होवे भला, जन-जन मंगल होय॥

ज्योत जगे फिर धरम की, दूर होय अँधियार।
बहुजन का हित-सुख सधे, हो बहुजन उपकार॥

फिर से गूंजे गगन में, शुद्ध धरम का घोष।
दूर होंय दुख दर्द सब, दूर होंय सब दोष॥

बजे धरम की दुंदुभी, गूंजे चारों कोण।
भीषण भयरव, पाप रव, सब हो जावें मौन॥

धरती पर फिर धर्म की, अमृत वर्षा होय।
शाप ताप सबके धुलें, अंतस शीतल होय॥

जग में बहती ही रहे, शुद्ध धर्म की धार।
दुखियारे प्राणी सभी, होंय दुखों के पार॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
• महालक्ष्मी मंदिर लेन, ८ महालक्ष्मी चैंबर्स, २२ वार्डन रोड, मुंबई-४०००२६.
-४९२३५२६, • सनस प्लाजा, शॉप ११-१३, १३०२, सुभाष नगर, पुणे-४११००२.
-४८६१९०, • दिल्ली-२९११९८५, • पटना-६७१४४२, • वाराणसी-३५२३३१,
• बैंगलोर-२२१५३८९, • चेन्नई-४९८२३१५, • कलकत्ता-२४३४८७४
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

जन जन पीड़ित हो रह्या, कि सौं क अत्याचार।
धरम जग्यां ही जगत रो, मिटसी पापाचार॥

धरती पर फिर उमड़सी, धरम गंग री धार।
प्यास बुझासी जगत री, करसी जन उद्धार॥

बवै धरा पर धरम री, फिर रसवंती धार।
रूखा सूखा चमन फिर, हो ज्यावै गुलजार॥

देख दुखी करुणा जगै, देख सुखी मन मोद।
सैं रै प्रति मैत्री जगै, रवै धरम रो बोध॥

द्रोही छोडै द्रोह नै, द्वेसी छोडै द्वेस।
क्रोधी छोडै क्रोध नै, मिटै चित्त रा क्लेस॥

धरती पर फिर धरम री, मंगळ बरखा होय।
साप ताप सैं रा धुलै, जन जन सुखिया होय॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स
३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ८४०८६, ८४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४४, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, ११ दिसंबर, २०००**

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. २५०/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१.** Regn. No. AR/NSK-46/2000,

Licenced to post without Prepayment of postage Posting day- **Purnima of Every Month,**
Licence number-- AR/NSK-WP/3 **Posted at Igatpuri-422403, Dist. Nashik**

If not deliverd please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ८४०७६
फैक्स : (०२५५३) ८४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
E-mail: <dhamma@vsnl.com>